# 11 सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
## [LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY]

**परिचय** (Introduction)—सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का प्रतिपादन सर्वप्रथम सन् 1854 ई. में जर्मन अर्थशास्त्री **एच. एच. गोसेन** ने किया था। अतः इस नियम को **'गोसेन का प्रथम नियम'** (First Law of Gossen) भी कहा जाता है। इस नियम को गोसेन का पहला नियम इसलिये कहा जाता है कि गोसेन का दूसरा नियम भी है जिसे **'सम-सीमान्त उपयोगिता नियम'** (Law of Equi-marginal Utility) कहते हैं। उनके अनुसार, **"जैसे-जैसे हम एक ही और समान सन्तोष की अधिकाधिक मात्रा प्राप्त करते जाते हैं, वैसे-वैसे उसमें तब तक कमी आती जाती है जब तक पूर्ण सन्तुष्टि नहीं पहुँच जाती है"**

"The amount of one and the same satisfaction declines as we proceed with that satisfaction until, satiety is reached." —*Gossen*

यह नियम वस्तु की इकाइयों एवं उनसे प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। वस्तुतः यह उपभोग के क्षेत्र का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण नियम है। यह नियम हमारे दैनिक जीवन के अनुभव पर आधारित है। हमारी आवश्यकताएँ अनन्त हैं, किन्तु आवश्यकता विशेष की पूर्ण सन्तुष्टि की जा सकती है। आवश्यकता की इसी विशेषता पर सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है। यह व्यावहारिक अनुभव की बात है कि उपभोग के क्रम में किसी वस्तु की जैसे-जैसे इकाइयाँ बढ़ती जाती हैं, उत्तरोत्तर इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती चली जाती है। एक ऐसा बिन्दु आता है जब वस्तु की इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता शून्य (zero) हो जाती है। इसके उपरान्त भी यदि उपभोग की क्रिया जारी रहती है तो प्राप्त होने वाली उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है। चूँकि यह नियम व्यावहारिक अनुभव पर आधारित है तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ, प्रत्येक जगह में तथा प्रत्येक देश में लागू होता है। अतः इस नियम को एक सार्वभौमिक (Universal) नियम भी कहा जा सकता है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—मान लिया जाय कि गर्मी के दिन में हमें प्यास लगी है। जब हम अपनी प्यास मिटाने के लिए पानी का पहला गिलास पीते हैं तो उससे बहुत ही सन्तुष्टि मिलती है। पुनः जब हम पानी का दूसरा गिलास लेते हैं तो उससे सन्तुष्टि तो मिलती है लेकिन पहले गिलास पानी की तुलना में कम। इसी प्रकार तीसरे गिलास पानी से हमें दूसरे गिलास पानी की अपेक्षा कम सन्तुष्टि मिलती है। यदि तीन ग्लास पानी से हमारी प्यास बुझ जाये तो चौथा गिलास पानी हम पीना नहीं चाहेंगे क्योंकि चौथे गिलास पानी से हमें कुछ भी उपयोगिता नहीं मिलेगी, भले ही उससे ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त हो जाय क्योंकि हमारी आवश्यकता की पूर्णरूपेण सन्तुष्टि हो गयी रहती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्यों-ज्यों मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों का उपभोग करता जाता है, त्यों-त्यों उसके लिए वस्तु की उपयोगिता घटती जाती है। मानव-स्वभाव की इसी प्रवृत्ति पर सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है।

इस सम्बन्ध में **क्लार्क** का विचार इस प्रकार है—**"यह उन सार्वभौम सिद्धान्तों में से एक है जो आर्थिक जीवन की सभी स्थितियों का निर्धारण करता है।"**

Scanned with CamScanner

"It is one of those universal principles which govern the economic life in all the stages of Development." —*Clark*

**परिभाषाएँ** (Definitions)

**प्रो. मार्शल के अनुसार, "किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ उसको प्राप्त होता है, वह अन्य बातों के समान रहने पर, वस्तु की मात्रा में प्रत्येक वृद्धि के साथ-साथ घटता जाता है।"**

"The additional benefit which a person derives from a given increase of his stock of anything diminishes, other things being equal, with every increase in the stock that he already has." —*Marshall*

**ब्रिग्स के अनुसार, "एक जैसी वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिता उसकी इकाइयों में वृद्धि के साथ घटती जाती है।"**

"The marginal utility of similar goods decreases with increase in the number of units of it in stock." —*Briggs*

**बोल्डिंग के अनुसार, "जब कोई उपभोक्ता अन्य वस्तुओं के उपभोग को स्थिर रखते हुए, किसी एक वस्तु के उपभोग को बढ़ाता है तो परिवर्तनशील वस्तु की सीमान्त उपयोगिता अन्त में अवश्य घटती है।"**

"As a consumer increases the consumption of any one commodity, keeping constant the consumption of all other commodities, the marginal utility of the variable commodity must eventually decline" —*Boulding*

**चैपमैन के अनुसार, "किसी वस्तु की जितनी अधिक मात्रा हमारे पास होती है, उतनी ही कम हम इसकी अतिरिक्त वृद्धि चाहते हैं या उसकी अतिरिक्त मात्रा के प्रति उतनी ही अधिक अनिच्छा होती है।"**

"The more we have of a thing, the less we want additional increments of it or the more we want not to have additional increments of it." —*Chapman*

**हेण्डरसन के अनुसार, "किसी वस्तु की सीमान्त उपयोगिता उस वस्तु की जितनी मात्रा उपलब्ध है, उसमें प्रत्येक वृद्धि के साथ घटती जाती है।"**

"The marginal utility of any one commodity diminishes with every increase in the amount that he has." —*Henderson*

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अन्य परिस्थितियाँ समान रहने पर जैसे-जैसे हम किसी वस्तु की इकाइयों को बढ़ाते जाते हैं अर्थात् उपभोग करते हैं वैसे-वैसे उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। एक बिन्दु ऐसा आता है, जब प्राप्त उपयोगिता शून्य हो जाती है जिसे पूर्ण सन्तुष्टि का बिन्दु कहते हैं। यदि उपभोग की क्रिया इस बिन्दु के बाद भी बढ़ायी जाती है तो उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है।

## सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की व्याख्या
## (EXPLANATION OF THE LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY)

यह नियम दैनिक जीवन के अनुभव पर आधारित है। हालाँकि, मानवीय आवश्यकताएँ अनन्त हैं किन्तु किसी दिये हुए समय में आवश्यकता विशेष की पूर्ति की जा सकती है। आवश्यकता की इसी विशेषता पर यह नियम आधारित है। दैनिक जीवन में हम अनुभव करते हैं कि यदि किसी वस्तु की अधिकाधिक इकाइयाँ किसी उपभोक्ता के पास बढ़ती जाती हैं, तो उत्तरोत्तर इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती चली जाती है। उपयोगिता ह्रास नियम को एक उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाय किसी व्यक्ति को भूख

Scanned with CamScanner

लगी है और वह समोसे खाने की इच्छा रखता है। वह किसी होटल में जाता है और समोसे खाना प्रारम्भ करता है। यह स्वाभाविक-सी बात है कि पहले समोसे से उसे अधिक उपयोगिता मिलेगी। मान लिया कि पहले समोसा से उसे दस (10) के बराबर उपयोगिता मिलती है। फिर वह दूसरा समोसा खाता है, और जिससे उसे कम उपयोगिता मिलेगी क्योंकि उसकी इच्छा की तीव्रता में कुछ कमी आ जायेगी। मान लिया दूसरे समोसे से आठ (8) के बराबर उपयोगिता मिलती है। इसी प्रकार तीसरे से 6, चौथे से 4, पाँचवें से 2 एवं छठे से शून्य यानि पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त हो जायेगी। यदि वह सातवें समोसे का भी प्रयोग करता है तो उसे ऋणात्मक उपयोगिता यानि – 2 प्राप्त होगी।

उपरोक्त तथ्य को निम्नलिखित तालिका द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है :

**तालिका**

| समोसों की संख्या | सीमान्त उपयोगिता | सीमान्त उपयोगिता के प्रकार |
|---|---|---|
| 1 | 10 | धनात्मक उपयोगिता |
| 2 | 8 | |
| 3 | 6 | |
| 4 | 4 | |
| 5 | 2 | |
| 6 | 0 | शून्य उपयोगिता |
| 7 | –2 | ऋणात्मक उपयोगिता |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता की समोसों की प्रथम पाँच इकाइयों तक धनात्मक उपयोगिता और भी घटती हुई प्राप्त होती है। छठी इकाई से शून्य के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है अर्थात यह पूर्ण सन्तुष्टि का बिन्दु है। सातवीं इकाई का प्रयोग इच्छा के विरुद्ध किया जा रहा है, अतः उसे ऋणात्मक उपयोगिता (–2) प्राप्त हो रही है।

उपरोक्त उदाहरण को निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा भी प्रस्तुत किया जा सकता है:

निम्न चित्र में OY-अक्ष पर सीमान्त उपयोगिता तथा OX-अक्ष पर समोसे की इकाइयों को दिखाया गया है। उपभोक्ता को समोसे की पहली इकाई से 10, दूसरी से 8, तीसरी से 6,

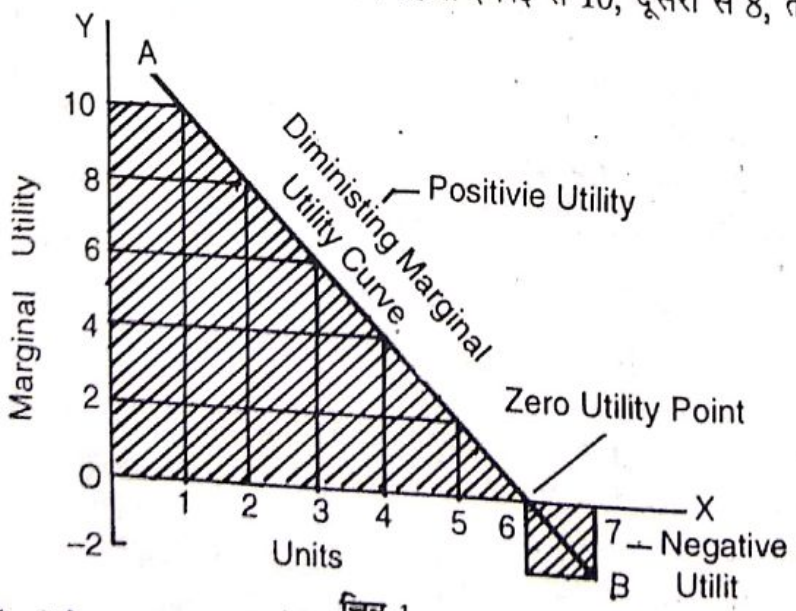


चित्र. 1

चौथी से 4, पाँचवीं से 2, छठी से शून्य उपयोगिता प्राप्त होती है। छठी इकाई से प्राप्त उपयोगिता

Scanned with CamScanner

पूर्ण सन्तुष्टि का बिन्दु है। चित्र से स्पष्ट है यदि उपभोक्ता सातवीं इकाई का प्रयोग करता है तो उसे ऋणात्मक उपयोगिता ($-2$) प्राप्त होती है। उपरोक्त प्रवृत्ति से जो AB रेखा बनती है वह ऊपर बायें से नीचे दाहिनी ओर झुकी हुई है जोकि सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की प्रकृति का द्योतक है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि AB रेखा का वह भाग जो OX-रेखा के ऊपर है धनात्मक उपयोगिता को प्रदर्शित करता है तथा AB रेखा का वह भाग जो OX-रेखा के नीचे है ऋणात्मक उपयोगिता का द्योतक है।

Scanned with CamScanner